

SPUP



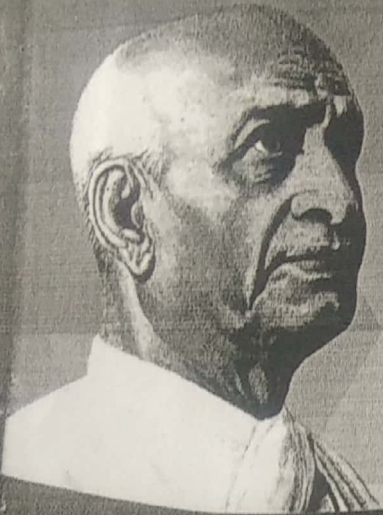
Knowledge Is Power

Rajasthan History Congress

31st Session

SOUVENIR

16-18 December, 2016



Dr. Sadhana Meghwal
Local Secretary, RHC



Organized by :

SPUP



Faculty of Social Science and Humanities

Sardar Patel University of Police, Security & Criminal Justice, JODHPUR
(A State University)

राजस्थानी लोकगीतों में लोक संस्कृति

सुरेन्द्र कुमार

सहायक आचार्य

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

राजस्थान की वीर प्रसूता धरती सैंकड़ों वर्षों से न सिर्फ वीरों को जन्म देती आई है वरन् संस्कार, संस्कृति, रीति रिवाज, परम्पराओं और कलाओं की धात्री भी रही है। राजस्थानी संस्कृति अपने अन्दर अनेक ऐसे संस्कार रीतिरिवाज परम्पराओं और लोक कलाओं को समेटे है जो विश्व पटल पर उसे विशिष्ट पहचान दिलाते है। भीषण गर्मी के दिनों में जब यहां के गांव गुवाड़ में जीवन की हरियाली हँसती खेलती दृष्टिगत होती है। कठिन जीवन के अभ्यस्त यहां के लोग अपने संस्कारों और परम्पराओं के कारण प्रत्येक कठिन परिस्थिति में स्वस्थ चित्त से आगे बढ़ता है। राजस्थानी लोक गीतों में उनके दैनिक जीवन के खट्टे मीठे अनुभव, दैनिक कार्य सामाजिक संबंध, पारिवारिक, रिश्ते-नाते, परिश्रम से पूर्ण कार्य आदि सभी को अपने अन्दर समेटने का प्रयास हुआ है। लोगों के यही सब दैनिक, क्रिया-कलाप मिलकर लोक संस्कृति का निर्माण करते है।

लोकगीत जनता के स्वाभाविक उद्गार है जिनका प्रादुर्भाव सुख-दुःख, हर्ष भोक आदि विविध अनुभूतियों के परिणाम स्वरूप हुआ है

गर्मी के दिनों में रेत के धोरे जितनी जल्दी गर्म होते हैं रातों में उतने ही ठण्डे भी होते हैं ऊँट सवार कतारिये इन ठण्डी रातों में अपनी लम्बी-लम्बी यात्राएं लोकगीतों के सहारे ही पूरी करते हैं। सावन-भादो की बरसाती रातों में जब 'तीजणी' प्रियतम की राह देखती हुई व्याकुल हो उठती है उसका हृदय प्रियतम के लिए तड़पता है तो लोकगीतों की लहरियां उस विरहिणी के हृदय के ताप पर भीतल चंदन का लेप लगाते हैं। नवरात्रि में देवी पूजा के समय लोक देवताओं के जन्मा-जागरण में लोक देवताओं का चरित्र चित्रण ओजस्वी वाणी में किया जाता है लोकगीत, लोक भजन, पड़ इत्यादि लोक गीतों के रूप लोक संस्कृति को अनेक प्रकार से मुखरित करते हैं। राजस्थानी लोक संस्कृति में कोई भी मांगलिक कार्य बिना लोक गीतों के सम्पन्न नहीं होता चाहे जन्मोत्सव हो, चाहे त्योहार, चाहे विवाह हो, चाहे अन्य कोई भी संस्कार हो बिना लोकगीतों के पूरे नहीं होते हैं। राजस्थानी लोग कठिन जीवन के अभ्यस्त होते हैं। प्रत्येक समय लोकगीतों की एक अजस्त्रधारा प्रवाहमान रहती है।

